रक्षाबंधन पर नए घर में पहुंचा 'लक्ष्मी'

आखिर बिटिया को मिला मां-बाप का साया

पत्रिका ह्यूमन एंगल

नए माता-पिता के साथ घर के लिए रवाना होती बालिका। पत्रिका

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. वह महज आठ साल की बालिका ही थी कि भगवान ने माता-पिता छीन लिए। कुछ समझ नहीं पाई कि उसकी जिंदगी में क्या हो रहा है। रिश्तेदार ने आसरा तो दिया, लेकिन मानो नौकरानी ही बना कर रख दिया। बिना मां-बाप की बेटी से बहुत काम करवाया जाता था। उसे मारा-पीटा जाता था। आखिर उसने हिम्मत जुटाई और किसी की मदद से बालिका गृह पहुंची। बालिका जब यहां आई तब दस साल की थी। छह साल उसने बालिका गृह में गुजारे, लेकिन वह खुश नहीं थी, उसे मां-बाप का प्यार चाहिए था। आखिर उसे विकट हालात से आजादी मिली, जब एक निःसंतान दम्पती ने उसे अपना लिया। आज जब उसे दम्पती को सौंपा गया, वह 16 साल की समझदार किशोरी हो चुकी है और नए माता-पिता, नया परिवार पाकर बहुत खुश है।

यह कहानी है लक्ष्मी (बदला हुआ नाम) की, जिसे दम्पती को सौंपा गया। छह साल बालिका गृह में गुजारने के बाद जब लक्ष्मी नए माता-पिता के साथ रवाना हुई तो गृह में रहने वाले हर सदस्य की आंखें र आईं। फोस्टर केयर सोसायटी के दाधिकारी बताते हैं कि जब बालिका के मन की बात जानना चाही तो उसने अपने परिवार-रिश्तेदारों के पास जाने से साफ इनकार कर दिया। उसने ऐसे नए परिवार में जाने की इच्छा जाहिर की, जहां उसे प्यार मिले। आखिर उसके लिए एक पोषक परिवार खोजा गया। परिवार को फोस्टर केयर के नियमों की जानकारी दी गई और आखिर परिवार ने बालिका का जीवन संवारने का निर्णय लिया। नए माता-पिता ने भी बालिका को प्यार भरा वातावरण देने की इच्छा जताई। सोसायटी के तकनीकी सहयोग से बाल कल्याण समिति व जिला बाल संरक्षण इकाई ने बालिका को दम्पती के सुपुर्द किया।

लेने आए थे बेटा, पसंद आई लक्ष्मी

सोसायटी ने बताया कि दम्पती बेटे के रूप में लड़का लेने आए थे। वे कम उम्र का बच्चा नहीं लेना चाहते थे और बड़ी उम्र में लड़का नहीं था। ऐसे में सोसायटी ने दम्पती की काउंसलिंग की तो वे बालिका को लेने के लिए तैयार हो गए। बालिका भी दम्पती से मिल खुश थी।

सोसायटी करेगी पर्यवेक्षण

बाल कल्याण समिति पोष्य बच्चों की कानूनी संरक्षक है। सोसायटी हर माह परिवार में जाकर बालिका के पालन- पोषण संबंधी पर्यवेक्षण करेगी। इसके बाद बालिका को परिवार के साथ रखे जाने की अवधि बढ़ाई जाएगी। इससे पहले भी सोसायटी ने परिवार की जांच की।

परिवार ने की अगवानी

बालिका गृह से दम्पती जब लक्ष्मी को लेकर घर पहुंचे तो परिवार ने उत्साह से उसका स्वागत किया। परिवार के अन्य सदस्यों ने भी सयानी बिटिया के रूप में अपना लिया। इस मौके पर घर में उत्सव का माहौल रहा। रिश्तेदारों ने घर लक्ष्मी आने की बधाइयां दी।

अब तक 16 बच्चों को मिला परिवार : वात्सल्य योजना (फोस्टर केयर) के तहत उदयपुर जिले में अब तक 16 बच्चों को परिवार आधारित देखभाल से जोड़ा जा चुका है। सोसायटी के तकनीकी सहयोग से बाल कल्याण समिति सदस्यों की मौजूदगी में इस बालिका को भी माता-पिता के साथ भेजा गया।

वाराणसी की गुमशुदा युवती को भेजा घर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. सिटी रेलवे स्टेशन की चाइल्ड लाइन को एक युवती स्टेशन पर मिली। वह अपने बारे में ज्यादा कुछ बताने की स्थिति में नहीं थी। उसने खुद के वाराणसी, बनारस की रहने वाली होना बताया। उसके बताए गए नम्बर पर कॉल करने पर बताया कि युवती की दिमागी हालत ठीक नहीं है। ऐसे में वह लापता हो गई थी। आखिर कुछ दिन विकल्प हेल्पलाइन और सपोर्ट सेंटर पर आश्रय दिया गया। निदेशक उषा चौधरी ने बताया कि परिजनों के उदयपुर आने पर युवती को उनके साथ रवाना किया गया।

मां को बेटी से मिलाया

जतन संस्थान की ओर से संचालित रेलवे चाइल्डलाइन ने मां को एक साल की बेटी से मिलाया। बताया गया कि मावली की रहने वाली

बड़े को देख रो पड़ा छोटा भाई

रेलवे चाइल्ड को एक बालक सिटी रेलवे स्टेशन पर मिला। समन्वयक मोईन मंसूरी ने बताया कि बड़ा भाई बालक को उदयपुर घुमाने लाया था। पैसे कम होने पर वह बालक को बस स्टैंड पर छोड़ बांसवाड़ा चला गया। बालक रोता हुआ सिटी रेलवे स्टेशन पहुंच गया। टीम ने बालक से जानकारी लेकर आरपीएफको सूचना दी। उसके बड़े भाई को बुलाकर बालक सुपुर्द किया गया।

महिला ने घरेलू झगड़े के चलते अपनी बहू को सिटी रेलवे स्टेशन पर छोड़ दिया और उसकी एक साल की बेटी को साथ ले गई। महिला को स्टॉप द सखी सेंटर में आश्रय दिया गया।

(Rajasthan Patrika)

21 August 2021

Saturday.